स्कूल की सीखने की संस्कृति की तरफ़ चरणबद्ध वापसी

श्रीकान्त श्रीधरन

कोविड-19 ने इस तरह की स्थिति पैदा की है, जिसने हमें यह एहसास कराया कि शिक्षा केवल एक हद तक ही डिजिटल की जा सकती है। नतीजा यह हुआ कि प्राइवेट स्कूलों ने दिखावे के साथ सीखने का कुछ आभास बनाए रखा जो उनके ख़ुद के बने रहने के लिए ज़रूरी था। इसी दौरान, सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों पर हुए सबसे बड़े अध्ययन से यह पता चला कि 80-90 प्रतिशत बच्चों ने पिछले साल में गणित और भाषा में सीखी हुई कम-से-कम किसी एक क्षमता को खो दिया है। 20-90 प्रतिशत विद्यार्थियों ने इन विषयों में किन्हीं विशिष्ट क्षमताओं को खोया है। हालाँकि इस नुक़सान को इस आँकड़े में तब्दील करना मुश्किल होगा कि ठीक-ठीक कितने महीनों की पढ़ाई छूट गई, लेकिन इतना तो साफ़ है कि जितने महीने स्कूल बन्द रहे यह उससे कहीं ज़्यादा है। इस लेख को लिखते समय स्कूलों को बन्द हुए 18 महीने हो चुके हैं। परिप्रेक्ष्य के लिए, संयुक्त राज्य अमरीका में हुआ एक अध्ययन यह दिखाता है कि *कोविड-19* सम्बन्धित बन्द के चलते विद्यार्थी 4-5 महीने पीछे हो गए हैं (संयुक्त राष्ट्र में स्कूल भारत की अपेक्षा काफ़ी कम दिनों के लिए बन्द रहे)।

व्यवसायों में 'आकस्मिक योजना' यानी ऐसी परिस्थितियों के लिए एक वैकल्पिक योजना होना एक आम बात होती है, पर शिक्षा जगत के लिए यह काफ़ी हद तक झटका लगने जैसा हुआ। साल 2020 के अन्त के दौरान अन्तरिम अवधियों में स्कूल खोलने की योजना कई बार बनाई गई थी। पुरानी योजना में कुछ फेरबदल करते हुए कुछ पाठों को इस तरह छोटा किया गया कि बचे हुए समय में उन्हें पूरा किया जा सके। लेकिन जब 2020-21 का शिक्षा सत्र ख़त्म हुआ तब इस पद्धति को भी लागू नहीं किया जा सका। जब 2021-22 के शिक्षा सत्र का भी अधिकांश हिस्सा बीत गया, तब यह साफ़ हो गया कि हमें पुरानी योजना में फेरबदल करने की बजाय एक नई योजना बनाने की ज़रूरत है।

यह लेख भारत में सरकारी स्कूलों में स्कूली शिक्षा की वापसी पर केन्द्रित है और इसमें भी प्राथमिक स्कूलों को केन्द्र में रखा गया है।

'सीखने की संस्कृति' का नुक़सान

घर पर बिना किसी पूरक शिक्षा के स्कूल से इतनी लम्बी अनुपस्थिति को केवल सीखने के नुक़सान की तरह नहीं देखा जाना चाहिए। यह सीखने की उस संस्कृति का नुक़सान है, जिसमें स्कूल विद्यार्थी को आमंत्रित करता है। सरकारी स्कूलों में जाने वाले प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के लिए स्कूल की सीखने की संस्कृति[1] और उनके घरों के बीच एक बड़ी खाई है। स्कूल सीखने के उस रूप की संस्कृति देता है जो इन बच्चों के घरों में उपलब्ध नहीं होती। मध्यम और अभिजात्य वर्ग से आने वाले बच्चों की स्थिति ऐसी नहीं है। इसलिए समस्या स्कूल की सीखने की संस्कृति में वापसी करने की है। यह इस समस्या को केवल सीखने के नुक़सानों को ठीक करने के रूप में देखने की तुलना में कहीं ज़्यादा बड़ा नज़रिया है।

समाधान — एक चरणबद्ध वापसी

सीखने की संस्कृति की तरफ़ वापसी को लेकर एक व्यापक विचार यह है कि इसे एक रेखीय तरीक़े से नहीं पर चरणबद्ध तरीक़े से किए जाने की ज़रूरत है, जिसमें चरणों के बीच कुछ तरह की गतिविधियों में ग़ैर-रेखीय छलाँगें हो सकती हैं।

इसमें हमारे पास एक तंग कार्य योजना की जगह सुझावों और विचारों की एक सूची तैयार हो जाएगी। चूँकि प्रत्येक राज्य के लिए बनने वाले ख़ाक़े में स्थानीय सन्दर्भ को शामिल किया जाना चाहिए, इसलिए एक ऐसी योजना देने की बजाय जो केवल एक सन्दर्भ में काम आए, विचारों की एक सूची ज़्यादा उपयोगी होगी जिसमें से अपने हिसाब से चुनाव किया जा सके।

पहला चरण

पूरे परिदृश्य को परिप्रेक्ष्य में लेने के लिए हमें तब से शुरुआत करनी चाहिए जिस समय स्कूल बन्द हुए थे और विद्यार्थियों का स्कूल आना बन्द कर दिया गया था। सत्र 2020-21 में यह चरण ज़्यादातर राज्यों में मोटे तौर पर व्यर्थ गया था। इस चरण में सीखने की फिर से शुरुआत करने के लिए काफ़ी कुछ किया जा सकता था। इस चरण के प्रमुख कारक हो सकते थे :

- वर्कशीटों का इस्तेमाल

- समुदाय के शिक्षित युवाओं से सहायता
- टीवी और यूट्यूब जैसे प्रसारण माध्यमों एवं व्हाट्सएप जैसे इंटरैक्टिव माध्यम का इस्तेमाल
- उपरोक्त सभी के लिए शिक्षक सहयोग

यहाँ विचार इस स्थिति को व्यवस्थित या नियंत्रित करने का नहीं है क्योंकि इस चरण में हो रही गतिविधियों को नियंत्रित नहीं किया जा सकता। इसकी बजाय शिक्षक के सहयोग से स्थानीय स्वयंसेवियों द्वारा ध्यानपूर्वक तैयार किए गए संसाधन उपलब्ध कराने पर ध्यान दिया जाना चाहिए। हो सकता है इस लेख के प्रकाशन तक हम इस चरण को पार कर चुके हों पर यह भविष्य के लिए उपयोगी साबित हो सकता है।

इस चरण का महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि सामान्य शिक्षा को टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल से घरों में न लाना बेहतर होगा। इसकी बजाय हमें विद्यार्थियों के वर्तमान सीखने के स्तरों, हमारे द्वारा निर्धारित किए हुए सीखने के उद्देश्यों, हर बच्चे की मौजूदा निकटस्थ क्षमताओं को ध्यान में रखकर और इस स्थिति (या इस तरह की किसी भी गम्भीर परिस्थिति) की बाध्यताओं को देखते हुए सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को जितना अच्छे से हो सके पूरा करना चाहिए। जैसा कि हम देख चुके हैं, इस चरण की सबसे मुख्य समस्या अवसर की समानता रही है।

इस चरण को समग्र रूप से पूरा करने के लिए इन पाँच क्षेत्रों पर काम करने की ज़रूरत है :

1. प्रसारण माध्यम के ज़रिए कक्षाएँ लगाना

केरल सरकार द्वारा चलाया गया “KITE VICTERS”[ii] यूट्यूब चैनल एक उदहारण के तौर पर देखा जा सकता है। लॉकडाउन के समय में इस चैनल के 30 लाख सब्सक्राइबर थे। इसके अन्तर्गत एक टाइमटेबल के अनुसार कक्षा और विषय के अनुरूप टीवी पर सीधे प्रसारण होते थे। ये बाद में देखे जाने के लिए यूट्यूब पर भी उपलब्ध होते थे। ये भले ही इंटरैक्टिव न रहे हों लेकिन इनके माध्यम से पाठ बुनियादी रूप में बच्चों तक पहुँच जाते थे। टीवी और यूट्यूब चैनल, दोनों पर दिखाए जाने वाले इन पाठों की एक अच्छी पहुँच भी है जिससे लैपटॉप या स्मार्टफ़ोन पर आने वाले पाठों की तुलना में पहुँच की समानता बेहतर तरीक़े से सुनिश्चित हो रही है।

2. सीखने की गतिविधियों के लिए वर्कशीट

अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन और कुछ अन्य संस्थाओं द्वारा तैयार की गई वर्कशीट इसके अच्छे उदाहरण हैं। इसके पीछे यह सोच है कि बच्चे जहाँ कहीं भी हों, वहाँ नियमित रूप से ऐसी गतिविधियाँ कर पाएँ जो अलग-अलग कक्षाओं के सीखने के अपेक्षित प्रतिफलों के अनुसार तैयार की गई हों। मगर वर्कशीट स्तर के उपयुक्त हो न कि कक्षा के उपयुक्त।

साथ ही, इन वर्कशीटों को इस तरह तैयार किया जाए कि वालिंटियर इनके साथ आसानी से काम कर सकें। ये सामान्य कार्यपुस्तकों से भिन्न रहेंगी, जिन्हें शिक्षक के नेतृत्व में हो रही कक्षाओं की गतिविधियों के पूरक के रूप में तैयार किया जाता था। हालाँकि आदर्श रूप से, वर्कशीटों का इस्तेमाल नई अवधारणाओं से परिचय कराने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। लेकिन इन्हें प्रसारण कक्षाओं के पूरक के तौर पर भी इस्तेमाल किया जा सकता है क्योंकि इस तरीक़े में बच्चा केवल सुनने और देखने की अपेक्षा गतिविधियाँ करने में व्यस्त होगा। इन वर्कशीटों का प्रकाशन और वितरण, निश्चित ही एक चुनौती बनी रहेगी क्योंकि बच्चे अलग-अलग जगहों पर हो सकते हैं, जैसे कि प्रवासी मज़दूरों के बच्चे।

3. वालिंटियर से सहयोग

चूँकि इस चरण में शिक्षक हर बच्चे के साथ नहीं हो सकते इसलिए कोई भी ऐसा व्यक्ति जिसके पास बच्चे से निकटता रखने वाली किसी स्तर की शिक्षा हो, माता-पिता में से कोई या आस-पड़ोस में रहने वाले शिक्षित युवा आगे आकर इस काम में सहयोग कर सकते हैं।

प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षा किसी मार्गदर्शक और प्रेरक मौजूदगी के बिना नहीं हो सकती। यह बात राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की इस अनुशंसा जैसी ही है : ‘स्थानीय और ग़ैर-स्थानीय दोनों प्रकार के प्रशिक्षित वालिंटियर के लिए इस बड़े पैमाने के अभ्यास में भाग लेना बहुत आसान बनाया जाएगा। यदि समुदाय का प्रत्येक साक्षर सदस्य किसी एक विद्यार्थी को पढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हो जाए, तो इससे देश का परिदृश्य शीघ्र ही बदल जाएगा। इस दृष्टि से स्कूल के पूर्व विद्यार्थियों और स्थानीय समुदाय के स्वस्थ वरिष्ठ नागरिकों से उपयुक्त व्यक्तियों की पहचान की जाएगी। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए साक्षर वालिंटियर, सेवानिवृत्त वैज्ञानिकों/ सरकारी/ अर्द्ध-सरकारी कर्मचारियों, पूर्व विद्यार्थियों और शिक्षाविदों का एक डेटाबेस तैयार किया जाएगा।’

क्या *कोविड* काल से बेहतर मौक़ा हो सकता था इस डेटाबेस को तैयार करने के लिए?

4. शिक्षक की भूमिका

वर्कशीटों के वितरण व उन्हें पूरा करवाने, समुदाय की मदद से वालिंटियर की पहचान करने और वालिंटियर से योजना, समीक्षा व सहयोग के लिए व्हाट्सएप समूहों या टेलीकांफ्रेंस द्वारा नियमित तौर से जुड़ने के इस पूरे तंत्र को समर्थ बनाने में शिक्षकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

5. पाठ्यक्रम बनाने वाली संस्थाओं (जैसे की एससीईआरटी) की भूमिका

समानान्तर रूप से, इस चरण का प्रयोग अगले चरणों के लिए संशोधित पाठ्यक्रम बनाने के लिए किया जा सकता है।

मौजूदा पाठ्यपुस्तकों/ कार्डों में से अंश लेने की बजाय, नीचे दी गई चीज़ें करने की ज़रूरत है :

- हर कक्षा स्तर से अगले स्तर पर जाने वाले, सीखने के मुख्य प्रतिफलों का विस्तार से विश्लेषण करें।
- पूरी कक्षा या समूहों या फिर एक विद्यार्थी के लिए ध्यानपूर्वक तैयार की गई गतिविधियों के ज़रिए इस ओर बढ़ने के लिए एक रास्ता बनाएँ।
- बहु-स्तरीय परिदृश्य को देखते हुए, पाठ्यपुस्तक-आधारित पाठ्यक्रम की तुलना में कार्ड-आधारित पाठ्यक्रम चुनना बेहतर हो सकता है।iii

दूसरा चरण

दूसरा चरण वह अवधि है, जब बच्चे स्कूल वापस तो लौट आए हैं पर 'सामान्य शिक्षा' अभी भी महीनों दूर है। इस चरण में जल्द-से-जल्द सामान्य होने की तरफ़ लौटने से ज़्यादा ज़रूरी है, धीमी गति से शिक्षकों, विद्यार्थियों और पालकों की स्थिरता की तरफ़ वापसी के मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर ध्यान देना। इस चरण में दो कारणों की वजह से जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए — चिकित्सीय और शैक्षिक। इस अवधि के मुख्य पहलू हैं :

- जल्दबाज़ी के कारण पहले चरण की तरफ़ पतन न हो इसकी सावधानी रखना
- सीखने की संस्कृति में वापसी के मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर ध्यान देना

इसका मतलब है कि शिक्षक-विद्यार्थी सम्बन्धों और भावात्मक पक्ष को इसी प्रयोजन के लिए तैयार की गई गतिविधियों के ज़रिए फिर से बनाने की तरफ़ ध्यान देना। इसी दौरान, पहले चरण की कुछ गतिविधियों पर विचार करते हुए उन्हें आगे ले जाया जा सकता है। लेकिन यह इस बात पर निर्भर करेगा कि पहले कितना काम पूरा किया जा चुका है (और यह स्थिति प्रत्येक स्कूल के भीतर भी व्यापक रूप से भिन्न हो सकती है)।

कई संस्थाओं ने *कोविड*-उपयुक्त एहतियातों पर साहित्य तैयार किया है, जैसे कि डबल्यूएचओ द्वारा उत्तरित स्कूल पर पूछे गए सामान्य प्रश्न, शिक्षा मंत्रालय का *कोविड एक्शन प्लान* और सेंटर फ़ॉर ग्लोबल डेवलपमेंट का *प्लैनिंग फ़ॉर स्कूल रीओपनिंग* (स्कूलों को दोबारा खोलने के लिए योजना)। इनके तीन मुख्य पहलू हैं :

- लक्षणों के प्रति अतिरिक्त सतर्कता रखना
- शिक्षकों के टीकाकरण की स्थिति
- स्कूल परिसर के अन्दर सभी जगहों में वायुसंचार (वेंटिलेशन)

इस चरण में हम जितना कुछ बाहर कर पाएँ उतना बेहतर होगा। जितना हो सके शिक्षा को फिर से स्कूल परिसर में ही पेड़ों के नीचे या खुली जगहों पर लौटने दें। दूसरा ज़रूरी पहलू यह है कि सभी हितधारक स्कूल में वापसी के लिए सहजता महसूस करें — शिक्षक, विद्यार्थी और पालक। यह महसूस करने के लिए कि स्कूल में सभी तरह की सावधानियाँ बरती जा रही हैं, यह ज़रूरी है कि पालक और समुदाय इसका हिस्सा बनें। अगर कोई भी *कोविड-19* से ग्रसित होता है तो पूर्व-स्थापित प्रोटोकॉल के तहत स्थिति को सम्भालना चाहिए।

बच्चों को शैक्षिक और भावनात्मक रूप से सीखने की गतिविधियों की तरफ़ वापसी के लिए सहज महसूस होना चाहिए। पूरे आसार हैं कि बच्चों को स्कूल आकर, दोस्तों से मिलकर और स्कूल परिसर में खेल कर राहत महसूस होगी। फिर भी सीखने की गतिविधियों की प्रकृति अलग होती है और उनकी तरफ़ चरणबद्ध ढंग से ही वापस आना चाहिए। अगर इस सहजता के लिए एक महीना भी लग जाए तो भी यह अच्छी तरह से बिताया गया समय होगा। इसके बाद हर बच्चे का सीखने का स्तर पहचानने के लिए उनके साथ बेसलाइन गतिविधियों का एक सेट किया जा सकता है। इसके बाद धीरे से पहले चरण में तैयार की गई कार्ड-आधारित पाठ्यचर्या भी शुरू की जा सकती है।

तीसरा चरण

तीसरे चरण में हम ध्यान वापस सीखने के प्रतिफलों पर लाएँगे। इस चरण में ज़रूरी होगा, एक ऐसा पाठ्यक्रम तैयार करना जिसकी स्पष्ट योजना बच्चों को (जो सीखने के विभिन्न स्तरों पर हो सकते हैं) ध्यानपूर्वक चुनी हुई कई गतिविधियों के ज़रिए एक वाँछित स्तर तक ले जाना हो। इस चरण की सफलता यह सुनिश्चित करने में है कि कार्ड या जिस भी अन्य सामग्री की ज़रूरत हो वह पहले से बन गई हो और इस चरण की शुरुआत से पहले शिक्षक की अच्छे से तैयारी हो। मैं कार्ड का ज़िक्र इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि इस अत्यधिक विविध स्थिति के लिए एक कार्ड-आधारित बहु-कक्षा, बहु-स्तरीय (एमजीएमएल) पद्धति ज़्यादा वाँछनीय बन जाती है। फिर भी, अलग-अलग राज्यों में इसमें विविधता हो सकती है। यह तरीक़ा कर्नाटक जैसे राज्य के लिए आसान हो सकता है जहाँ कार्ड पहले से ही इस्तेमाल हो रहे हैं पर दूसरे राज्यों के लिए, जहाँ यह तरीक़ा लागू नहीं हुआ है, शायद यह उतना आसान न हो।

इस चरण में, विचार यह है कि नए (संशोधित) पाठ्यक्रम का अनुसरण किया जाए ताकि आयु-उपयुक्त सीखने के प्रतिफलों को हासिल किया जा सके। इसे हासिल करने के बाद, पिछले दो साल में हमने जो कुछ सीखा है उसके आधार पर सामान्य पाठ्यक्रम में संशोधन करके उसका अनुसरण किया जा सकता है। भविष्य को मद्देनज़र रखते हुए इस चरण में इन सभी सीखों को स्कूली शिक्षा में शामिल किया जा सकता है :

- शिक्षक उन गतिविधियों पर ध्यान दे सकते हैं जो सीखने के प्रतिफल के इर्द-गिर्द केन्द्रित हों। कुछ गतिविधियों से समय कम कर ज़्यादा ज़रूरी गतिविधियों पर समय लगाने की गुंजाइश हमेशा रहती ही है।
- घर का माहौल स्कूल में सीखने का पूरक बन सकता है। स्थानीय वालिंटियर कोविड के बाद बच्चों के समूहों के साथ काम कर सकते है, जैसे कि शिक्षा मित्र ।
- चूँकि अब अवधारणाएँ कक्षा में पढ़ाई जा सकती हैं तो हम पहले चरण में जारी की गई वर्कशीटों की जगह ऐसी कार्यपुस्तकों का इस्तेमाल कर सकते हैं जो सीखी हुई चीज़ों के सुदृढ़ीकरण और अभ्यास आदि पर ध्यान दे।
- टेक्नोलॉजी की भूमिका अभ्यास और तत्काल प्रतिक्रिया उपलब्ध कराने में देखी जा सकती है। मगर इसमें निवेश ज़्यादा है और इसका इस्तेमाल सन्तुलन में किया जाना चाहिए ताकि इसकी लत या अत्यधिक स्क्रीन-टाइम आदि स्थितियाँ न पैदा हों। हालाँकि टेक्नोलॉजी की बड़ी भूमिका सेवाकालीन शिक्षकों के प्रशिक्षण, आँकड़े इकट्ठे करने और शिक्षकों, पालकों व शैक्षिक अधिकारियों के बीच नियमित और ज़्यादा तेज़ संचार में हो सकती है। साधारण-से व्हाट्सएप समूह भी यह काम अच्छे से कर सकते हैं।

आगे की राह

कोविड-19 की वैश्विक महामारी ने शायद ही कोई नई सामाजिक स्थिति पैदा की हो, बस पहले से मौजूदा स्थितियों का ही परिवर्धन किया है। मध्यम और अभिजात्य वर्ग से आने वाले बच्चों की शिक्षा जारी रही, हालाँकि काफ़ी दरिद्र स्थिति में। सरकारी स्कूलों ने शुरुआत में काफ़ी इन्तज़ार किया, स्थितियों पर नज़र रखी और फिर कुछ पहल कीं, जिनमें अलग-अलग राज्यों के बीच काफ़ी भिन्नता रही।

ऊपर इन्ही बातों पर प्रकाश डाला गया है कि अभी से लेकर स्कूल खुलने तक और स्कूल खुलने के बाद भी कुछ हद तक सामान्य स्थिति लौटने तक क्या-क्या काम चरणों में हो सकते हैं। आने वाले समय में यह भी ज़रूरी है कि हम और ज़्यादा सकारात्मक ढंग से टेक्नोलॉजी और प्रबन्धन को शिक्षा में सम्मिलित करें। हमें शिक्षा में बेहतर प्रबन्धन की ज़रूरत है जो ऐसे समाधानों पर ध्यान दे जो शायद परिपूर्ण न हों पर बच्चों के सीखने के लिए कारगर हों।

प्रबन्धन एक ऐसी कला है जो अत्यधिक प्रसंग-आधारित है और नतीजों पर केन्द्रित होती है। हमें व्यवसाय में, समाज और प्राकृतिक वातावरण के प्रति एक सन्तुलित दृष्टिकोण रखने के लिए प्रबन्धन की ज़रूरत होती है। पर शिक्षा में हमें ज़मीन, इमारतों, सुविधाओं, लोगों और सीखने की प्रक्रियाओं के कहीं ज़्यादा बेहतर प्रबन्धन की ज़रूरत है। हमें विद्यार्थियों के मूल्यांकन और उनके सरकारी स्कूलों से निरन्तर हो रहे निकास के बाबत मिल रही नियमित प्रतिक्रियाओं के भी बेहतर उपयोग करने की ज़रूरत है।

हमें टेक्नोलॉजी के प्रति भी इसी तरह के अधिक सन्तुलित दृष्टिकोण की ज़रूरत है। हम प्राथमिक कक्षाओं के लिए ऐसी टेक्नोलॉजी देख सकते हैं जिनमें विद्यार्थियों की सीधी भागीदारी न हो, जैसे :

- दीक्षा[iv] (जिसका इस्तेमाल ब्लॉक और ज़िला, दोनों स्तरों पर स्थानीय कार्यशालाओं में होता है) जैसे पोर्टलों के ज़रिए शिक्षकों के लिए सभी भाषाओं में समृद्ध शिक्षाशास्त्रीय विषय वस्तु उपलब्ध कराना।
- सभी सम्बन्धित लोगों — शिक्षकों, पालकों और शैक्षिक अधिकारियों के बीच ऐसे अनुकूलित मैसेंजर एप्स के ज़रिए ज़्यादा तेज़ और नियमित संचार, जो सरकार की आँकड़े इकट्ठे करने की ज़रूरतों को भी पूरा करते हों।
- संरचनात्मक मूल्यांकन के आँकड़ों का विश्लेषण कर उन्हें प्रतिक्रिया सहित वापस शिक्षकों तक पहुँचाना जिसमें उन संशोधनों के संकेत हों जिन्हें शिक्षक आगे होने वाली सीखने की गतिविधियों में अपना सकते हैं।

Endnotes

i Loss of Learning During the Pandemic, February 2021, Azim Premji Foundation. https://tinyurl.com/86jhmf6d

ii https://www.youtube.com/c/itsvicters/featured

iii कर्नाटक की नली-कली जैसी कार्ड-आधारित पाठ्यचर्या वर्तमान के सेतु परिदृश्य में शिक्षण के लिए काफ़ी अच्छा तरीक़ा हो सकती है। कार्डों की मदद से बच्चे, जो किसी भी स्तर पर हों, अपनी-अपनी गति से आगे बढ़ सकते हैं जब तक कि वे अधिक सामान्य स्तर पर न पहुँच जाएँ और फिर वहाँ से पाठ्यपुस्तकें चीज़ों को आगे ले जा सकती हैं।

iv https://diksha.gov.in/



श्रीकान्त श्रीधरन ने लगभग 12 वर्षों तक स्कूली शिक्षा के सुधार के क्षेत्र में काम किया है। उन्होंने व्यवस्थागत बदलाव लाने के लिए विभिन्न स्तरों पर काम किया है, जिनमें शिक्षा में नागरिक समाज संगठनों के नेटवर्क के निर्माण और पोषण के अलावा ज़िला स्तर की टीम के साथ मिलकर किए गए काम शामिल हैं। उनके पास प्रबन्धन और प्रौद्योगिकी की शैक्षिक पृष्ठभूमि और अनुभव है। श्रीकान्त का मानना है कि खोजबीन के लिए एक दार्शनिक मानसिकता और क्रियान्वयन के लिए एक स्टार्ट-अप मानसिकता रखी जाए। उनसे sreekanth.sreedharan@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सिमरन साध